रूह से साक्षात्कार

एक अधूरी सी मुलाकात हुई थी जिससे

रीती गर्ग

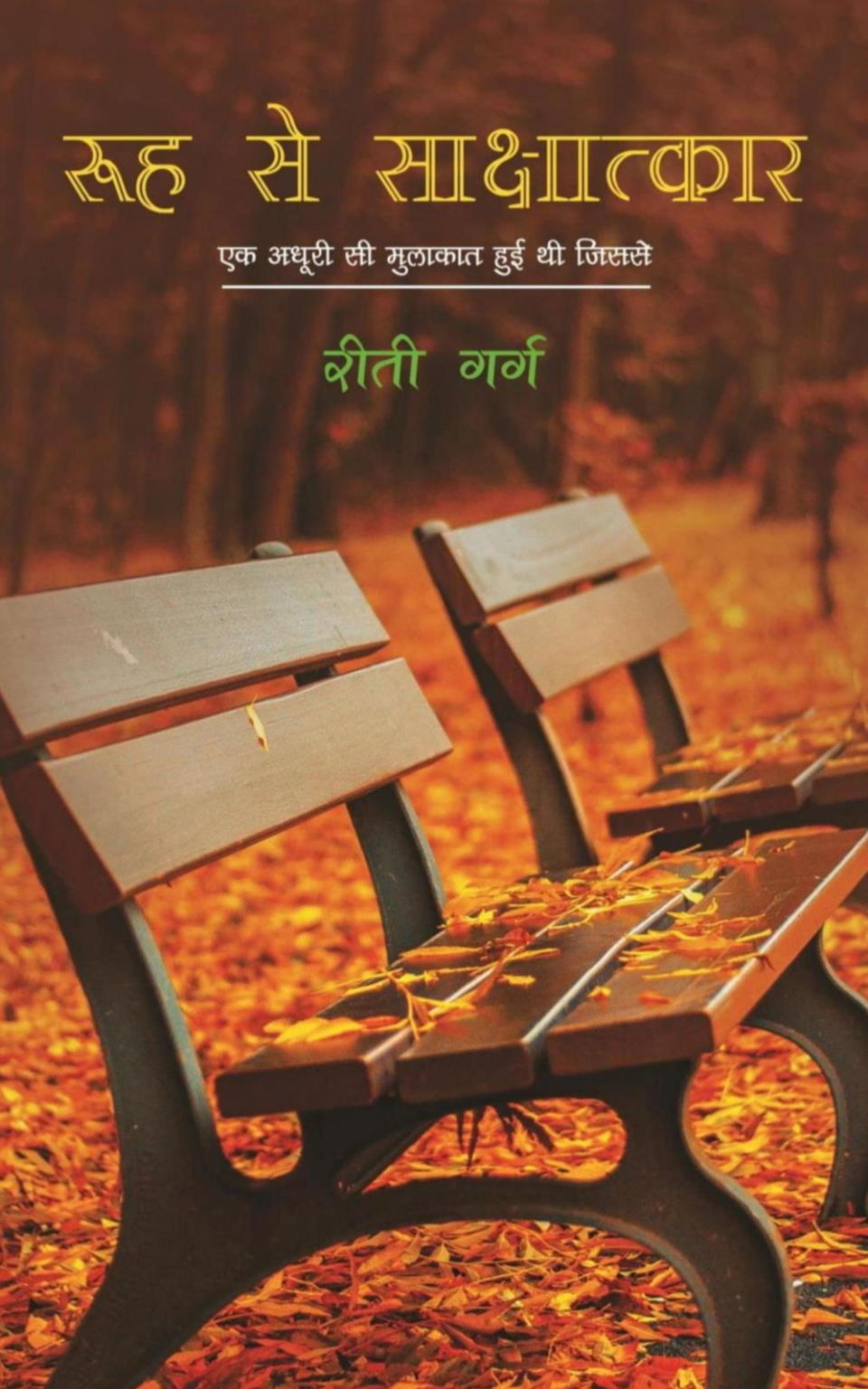

'रूह से साक्षात्कार'

एक अधूरी सी मुलाकात हुई
थी जिससे.....

Publishing-in-support-of,

FSP Media Publications

RZ 94, Sector - 6, Dwarka, New Delhi - 110075
Shubham Vihar, Mangla, Bilaspur, Chhattisgarh - 495001

Website: *www.fspmedia.in*

© Copyright, Author

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

ISBN:978-93-6026-036-1

Price: ₹ 160.00

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Publisher.

Printed in India

‘रूह से साक्षात्कार’

एक अधूरी सी मुलाकात हुई
थी जिससे.....

रीती गर्ग

मन से.....

बचपन में माँ अक्सर हाथ पकड़कर चलती और समझातीं कि, हाथ छुड़ाने से भीड़ में खो जाने का डर रहता है।

कुछ समझ में नहीं आता था, पर हाँ डर लगता था, और माँ का हाथ और जोर से पकड़कर, उनके आस–पास ही रहते।

पता यह नहीं था कि, खोने का डर बचपन से ज्यादा बड़े होने पर होता है। जब हम सब अपने ही भावनाओं के अंतरद्वंद में ही खो जाते हैं, और अलैदा हो जाते हैं, उन रिश्तों से जो मृगतृष्णा से हमको भ्रमित करते रहते हैं।

फिर भी इंद्रधनुष को देखने की चाह, टूटते तारों से मुराद माँगने की लालसा अभी थमी नहीं हैं।

एक ऐसे जादू पर विश्वास जो अंत में सब ठीक कर देता है, अभी डिगा नहीं है, और आँखों में से वो अनगिनत पलों की याद अभी मिटी नहीं है।

रूह को मुकम्मल करते रिश्ते....

समर्पित है ''रूह से साक्षात्कार,'' उन रिश्तों के नाम जिन्होंने मेरी रूह को मुकम्मल किया है।

मेरी माँ – श्रीमती राधा रानी अग्रवाल

मेरे पिता तुल्य – श्री अनिल कुमार अग्रवाल,

जिन्होंने मुझे जीवन की हर विषम परिस्थितियों में लड़ना सिखाया और अपनी मुस्कुराहट देकर, मेरे सारे आँसू खुद पर ले लिए।

मेरे पिता – स्वर्गीय सुरेन्द्र नाथ जी अग्रवाल

मेरे चाचा – स्वर्गीय प्रदीप कुमार जी अग्रवाल

जो शायद आज यहाँ होते तो उनको गर्व होता अपनी बेटी पर।

मेरे अनमोल रतन – दिवांशी गर्ग, आदित गर्ग,

जिनके बिना मेरी जिन्दगी अधूरी है।

मेरा भाई – अभिलाष अग्रवाल

मेरी भाभी- पारूल अग्रवाल

जिन्होंने छोटे होकर भी बाबुल के सारे फर्ज़ निभाए और मुझे जीवन का नया दृष्टिकोण दिया।

मेरी बहन – नीती गुप्ता

जो जताती नहीं पर हमेशा हर कदम पर जिसने मेरा साथ दिया है।

मेरी सबसे प्यारी दोस्त – नीलम भगतानी (सडू)

जिससे शायद किसी और जन्म का अन्जाना सा रिश्ता है और जिसने मुझे सिखाया कि अल्फ़ाजों से ज्यादा ख़ामोशी रिश्तों को मुकम्मल करती है।

और अन्त में मेरे परिवार के हर सदस्य को, जिनके प्यार और विश्वास के बिना ''रूह से साक्षात्कार'' बन्द बक्से का हिस्सा बन जाती।

मेरे लफ्ज़....

कुछ खास है नहीं मेरे पास अपने बारे में कहने के लिए, सिवाय इसके कि मैं भी एक आम सा चेहरा हूँ, जो इस भीड़ में कहीं खोया सा है, जिसका वजूद लापता है और एक तलाश पर निकला है कि शायद इस ज़िन्दगी को जीते – जीते मुझे भी अपनी पहचान मिल जाए और एक पल के लिए ही सही, ये चेहरा भी कुछ खास बन जाए।

वो जो आसमान दिखता है ना, उसकी ऊँचाई छूने की चाह है इसे,

वो जो सागर की असीम गहराई है ना, उसको मन में उतारने की आरजू है इसे,

तो बस चल पड़े हैं.....

तो जब इन दोनों में से कोई एक भी ख्वाईश पूरी हो जाएगी ना, और हम रीती गर्ग या रीती अग्रवाल के नाम से मुक्तलिफ़ रीती के नाम से अपना तार्रुफ़ दे पाएँगे, उस दिन यकीनन कुछ अपने बारे में कहने को होगा।

लम्हे कुछ बीते हुए.....

''रूह से साक्षात्कार'' उस हर पल की कहानी है जो यादों में कहीं ज़िन्दा है और मार्मिक से, लाचार से वजूद की तलाश में भटक रहें हैं।

उन रिश्तों की याद है जिन्होंने मेरी रूह को मुकम्मल किया और उन रिश्तों की कसक है, जिनसे बहुत दर्द मिला।

आँखों की नमी जो रातों को तकिए को गीला कर देती,

हर सपना जो जन्म तो लेता पर मजबूरियों से कसमसा के दम तोड़ देता,

हर आरजू जो दिल महसूस करता, पर लाचारी से ज़ाहिर करने से कतराता,

हर वो भावनाएँ जो मुझको, खुद मुझसे रूबरू कर देती,

उन्हीं संजीदा और मासूम पलों की यादें हैं.....

''रूह से मुलाकात''

रात में तारों को देखते हुए यूँ ही अचानक लगा कि, हौले से दिल ने पूछा हमसे, ''क्या धड़कने की इज़ाजत है मुझको?''

हैरानी से देखकर हम भी झगड़ पड़े, ''हम तो कायल हैं आपके और आप के कहने पर ही चलते हैं, फिर ये ऐसा अनमना सा सवाल क्यूँ? क्या हमको हर बार तकलीफ देने की आदत बना ली है आपने?''

बड़ी नरमी से मुस्कुराते हुए दिल भी अजब मिज़ाज में थे, बोले, ''ना! बेइन्तहाँ तकलीफ तो आप दे जाते हो मुझको, जब भी अपने जज़्बातों को सिफर में रखते हो, जब भी कुछ सोच के थम जाते हो, जब मुस्कुराते हुए अजब से ठिठकते हो और दिमाग के कहने पर हमसे दूर हो जाते हो। जो इतना यकीन है मुझपर, तो क्यों मेरी बातों पर कतराते हो?''

और हम क्या कहते? बड़े शर्मिंदा से धीरे से बस यही कह पाए, ''हाँ जनाब, आज से आपको धड़कने की इज़ाजत है। भरोसा तो नहीं दिला सकते पर, यकीनन आज से बदस्तूर आपकी राहों पर पूरी तरह से चलने का इरादा है अपना।''

अब देखो, ये दिल की राहें कहाँ ले जाए हमको.....

रूह से मुलाकात

आज सोचा दिमाग से कुछ गुफ्तगू कर ली जाए। सब दिमाग से काम करके देखो, कितने मजे की ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं, बस फिर क्या था.....

चल दिए उसी गली!

बड़ा अजीब नज़ारा था – हर तरफ रोशनी, दोस्ती, चमक और खुशियाँ दिखी। बहुत मायूसी हुई कि हम इतनी सुन्दर दुनिया से अब तक अनमने से बचे रहे थे।

तभी अचानक एक इंद्रधनुष दिखा, भागे उसकी तरफ और पास गए उस अज़ब सी दुनिया के करीब पहुँच गये। क्या देखा?

बेचैनी झूठ, दिखावा – अरे कैसी दुनिया है यह? चमचमाती सी मगर कितनी तन्हा। ये सब तो नहीं चाहिए था मेरे को – गलत आ गये हम तो। चल दिए वापस मुड़कर अपनी गली – जहाँ सारे आराम नहीं थे पर सुकून था। जहाँ दोस्त कम थे मगर सच्चे थे। जहाँ जो थोड़े भी रिश्ते थे, अपने थे, प्यार था।

इस दिल और दिमाग के खेल में बहुत रिश्ते गवाँ दिए

बस, तय कर लिया – दिमाग से सोचने की कुब्बत है नहीं अपने पास – दिल के सिवा और कुछ है नहीं देने को। साथ चलो या जाने दो, फैसला आपका.....

बेफिक्र मुस्कुराहटों से हम इन्तज़ार करते रहें,
उनकी जिन्दगी में अपने ज़िक्र का,
पर आँखों का दर्द बयाँ कर गया
हकीकतें रिश्ते की!

मैंने लफ्ज़ों के सहारे रास्ते कर दिये हैं बंद,
जो दिल में आना हो तो आँखों की भाषा
समझना सीखो!

उस लम्हें को जाने कैसे अपना समझ बैठे थे,
वो लम्हा जो किसी और को छू के गुज़रा था!

हाथ छुड़ाया तो वजह बता दी होती,
हम पास आते ही नहीं, जो दूर जाने की
तरबियत ज़ता दी होती!

बेरूख़ी से रूख़ करना हमें आया ही नहीं,
वरना दरम्यॉन यूँ फ़ासलें आए न होते!

ये किसके निशाँ हौले से दिल पे दस्तक दे गये,
आँच जलती रही मद्धम और हम ख़ाक हो गये!

हाथों की लकीरों के वावस्ता क्या कहिए,
महज़ कुछ आड़ी–तिरछी रेखाएँ तकदीर बदल देती है!

कुछ रोशनी मेरे आँगन को भी मयस्सर कर दें,
आज फिर उजालों में भटक जाने को जी चाहता है!

रूह से साक्षात्कार

अक्सर हम ज़िन्दगी की राहों पर चलते–चलते भटक जाते हैं और शायद उसी गहन अंधकार में, जो आकर हमें थामती है, वो होती है हमारे अपने अंदर की आवाज, हमारी रूह, दिमाग से सोचना आया नहीं और दिल ने भी अक्सर नाराज किया है, फिर भी अपनी दिल की सच्चाइयों पर विश्वास है और मेरा मानना है कि, जो लोग दिल की सुनते हैं, उनके रिश्ते कम पर सच्चे होते हैं.....

लेखक से संपर्क हेतु:
reeti.garg@gmail.com

FSP
FSP MEDIA PUBLICATIONS

BOOK AVAILABLE
Flipkart
GET IT ON Google Play
amazon
amazonkindle

EBOOK AVAILABLE

ISBN 978-93-6026-036-1
9 789360 260361